Dr. jaya
Lecture Series:- 92 Deptt of Sociology
Date:- 30/07/2020 BA Part I (Hons)
Paper-2, Unit-4

Topic = Process and effects of Division of Labour

7. वर्ग-संघर्ष (Class-Conflict) - दुर्खीम ने श्रम-विभाजन से उत्पन्न होने वाले परिणामों में इनके कुछ दुष्प्रभावों की भी चर्चा की है। इनमें वर्ग-संघर्ष तथा सामाजिक विघटन श्रम विभाजन के प्रमुख दुष्प्रभाव है। श्रम-विभाजन से न केवल व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन मिलता है बल्कि प्रत्येक वर्ग के लोग अपने कार्य के महत्व को समझने के कारण अन्य वर्गों के प्रति अनुदार होने लगते हैं। यह दशा समाज को अनेक ऐसे वर्गों में विभाजित कर देती है जो स्वयं को एक-दूसरे से पृथक समझने लगते हैं। इनके फलस्वरूप अक्सर विभिन्न वर्गों के बीच सहयोग के स्थान पर संघर्ष आरम्भ हो जाता है। अक्सर इसकी परिणति सामाजिक विघटन के रूप में देखने को मिलती है। यह सच है की वर्ग संघर्ष से समाज अधिक गतिशील बन जाता है लेकिन ऐसी गतिशीलता सदैव रचनात्मक नहीं होती।

श्रम विभाजन के उपर्युक्त सामाजिक सिद्धान्त के दुर्खीम ने यह निष्कर्ष दिया निष्कर्ष दिया कि श्रम-विभाजन एक स्थिर दशा नहीं है बल्कि अपनी प्रकृति से परिवर्तनशील होने के कारण अस्तित्व के लिए होने वाला संघर्ष कुछ कठिन जरूर हो जाता है लेकिन श्रम-विभाजन में होने वाली प्रत्येक वृद्धि लोगों की पारस्परिक निर्भरता को बढ़ाकर सामाजिक एकता मे

पूर्ति करती है। इस दृष्टिकोण से श्रम विभाजन के सामाजिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

समालोचना (Critique)

दुर्खीम द्वारा प्रस्तुत सामाजिक एकता एवं श्रम विभाजन से सम्बन्धित सिद्धान्त निश्चित रूप से एक नवीन दृष्टिकोण पर आधारित है। दुर्खीम से पहले विभिन्न समाजशास्त्रियों ने श्रम-विभाजन तथा सामाजिक एकता के बीच कोई सम्बन्ध द्वारा इसके माध्यम से सामाजिक विकास की प्रक्रिया को स्पष्ट किया। उनके पश्चात भी अनेक विद्वानों ने दुर्खीम के विचारों के कुछ पक्षों को स्वीकार नहीं किया है।

सर्वप्रथम यह कहा जाता है कि यदि हम दुर्खीम द्वारा प्रस्तुत सामाजिक एकता तथा श्रम-विभाजन की अवधारणाओं का मूल्यांकन करें तो स्पष्ट होता है इन अवधारणाओं में एक ओर सामूहिक चेतना पर आवश्यकता से अधिक बल दे दिया गया है जबकि दूसरी ओर दुर्खीम ने यह मान लिया है कि श्रम विभाजन अनिवार्य रूप से जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम होता है। इस सम्बन्ध में बार्न्स ने लिखा है "ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्खीम के श्रम विभाजन के सिद्धान्त में समाजशास्त्रीय आधार की अपेक्षा जीवकीय आधार को अधिक महत्वपूर्ण मान लिया गया है। इसको दुर्खीम के विश्लेषण की वैज्ञानिकता कम हो जाती है। दुर्खीम का यह निष्कर्ष भी सन्देहपूर्ण है

Scanned with CamScanner

कि श्रम विभाजन का एक आवश्यक प्रकार्य सामाजिक एकता में वृद्धि करना है। अनेक दशाओं में श्रम विभाजन पर यह भी आरोप लगाया गया है। कि दुर्खीम ने जिस रूप में यान्त्रिक तथा प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं;

Scanned with CamScanner